This question paper contains 7 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **643**

Unique Paper Code : **205455** **D**

Name of the Paper : **पेपर नं. 14 : आधुनिक काव्य**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline (हिंदी अनुशासन)**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतेंदु युग की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिये। 15

अथवा

प्रगतिवाद की मुख्य प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

2. किसी **एक** पाठ्यपुस्तक से संबंधित प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(क) यशोधरा के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की नारी-भावना पर एक लेख लिखिए।

अथवा

यशोधरा की चरित्रगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

(ख) 'कुरुक्षेत्र' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये।

अथवा

'कुरुक्षेत्र' की समसामयिकता पर विचार कीजिये।

P.T.O.

(ग) 'महाप्रस्थान' के आधार पर युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण कीजिये।

अथवा

'महाप्रस्थान' में चित्रित राज्य व्यवस्था के स्वरूप पर विचार कीजिये।

3. किसी **एक** पाठ्यपुस्तक से संबंधित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 10

(क) मुझको बहुत उन्होंने माना,

फिर भी क्या पूरा पहचाना ?

मैंने मुख्य उसी को जाना,

जो वे मन में लाते

सखी वो मुझसे कह कर जाते।

अथवा

तुच्छ न समझें मुझको नाथ,

अमृत तुम्हारी अंजलि में

तो भाजन मेरे हाथ

तुल्य दृष्टि यदि तुमने पाई,

तो हममें ही सृष्टि समाई

स्वयं स्वजनता में वह आई,

दे कर हम स्वजनों का साथ

तुच्छ न समझो मुझको नाथ।

(ख) न्यायोचित अधिकार मांगने

से न मिले, तो लड़ के,

तेज़स्वी छीनते समर को

जीत, या कि खुद मरके

किसने कहा, पाप है समुचित

सत्व-प्राप्ति-हित लड़ना ?

उठा न्याय का खड्ग समर में

अभय मारना-मरना ?

अथवा

शिव का पदोदक ही पेय जिनका है रहा,

चक्खा ही जिन्होंने नहीं स्वाद हलाहल का;

जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं,

ठेस लगते ही अहंकार नहीं छलका;

जिनको सहारा नहीं भुज के प्रताप का है,

बैठते भरोसे किये वे ही आत्मबल का।

(ग) आज नहीं तो कल

राजा से अधिक कठोर हो जाएंगे

ये राज्य और सुदूर भविष्य में

राज्य से अधिक अमानवीय हो जाएँगी

ये राज्य-व्यवस्थाएँ।

अथवा

अभिमन्यु का सामूहिक वध तथा

युद्ध के अनेक अनाचार–

द्रोणाचार्य अपनी आँखों से देखने के लिए

विवश क्यों ?

इसलिए कि राज्य

उनका भरण-पोषण भर कर रहा था।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये : 8+8+8=24

(क) भारतेंदु की मुकरियों का विश्लेषण कीजिये।

(ख) जयशंकर प्रसाद की कविता 'आंसू' का मूल भाव बताइए।

(ग) 'वह तोड़ती पत्थर' के आधार पर निराला की यथार्थ चेतना पर विचार कीजिये।

(घ) छायावादी कवि सुमित्रानंदन पन्त की कविताओं में प्रकृति अपने सुन्दरतम रूप में अभिव्यक्त हुई है। स्पष्ट कीजिये।

(ङ) अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' की मूल संवेदना पर विचार कीजिये।

(च) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में व्यक्त प्रगतिशीलता को रेखांकित कीजिये।

(छ) वीरेंद्र मिश्र के गीत 'अविराम चल मधुवंती' के भाव सौन्दर्य का उद्घाटन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 7+7=14

(क) मेरा पग-पग संगीत भरा,

श्वासों में स्वप्न पराग झरा,

नभ के नवांग बुनते दुकूल,

छाया में मलय बयार पली

मैं नीर भरी दुःख की बदली

(ख) जो घनीभूत पीड़ा थी

मस्तक में स्मृति-सी छायी

दुर्दिन में आँसू बनकर

वह आज बरसने आयी

(ग) कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बंधा यौवन,

नत नयन, प्रिय-कर्म-रत-मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहार;

सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार

(घ) स्तब्ध ज्योत्स्ना में जब संसार

चकित रहता शिशु-सा नादान,

विश्व की पलकों पर सुकुमार

विचरते हैं जब स्वप्न अजान,

न जाने नक्षत्रों से कौन

निमंत्रण देता मुझको मौन

643

(ङ) आज नदी बिलकुल उदास थी

सोई थी अपने पानी में,

उसके दर्पण पर

बादल का वस्त्र पड़ा था

मैंने उसको नहीं जगाया,

दबे पाँव घर वापस आया।